International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 318-319

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 318-319
www.allresearchjournal.com
Received: 21-11-2017
Accepted: 23-12-2017

मूर्ति
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग, जनता कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ऐलनाबाद, हरियाणा, भारत

Correspondence
मूर्ति
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग, जनता कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ऐलनाबाद, हरियाणा, भारत

साहित्य और समाज

मूर्ति

प्रस्तावना

हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। हम सभी भारतवासी हिन्दी भाषा पर गर्व करते हैं। हिन्दी भाषा के माध्यम से सब धर्मों और सम्प्रदायों में एकता और मित्रता की भावना जागृत हुई है। हिन्दी के प्रमुख रचनाकारों (कवियों) से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी भारत की भाषा है, किसी धर्म विशेष की नहीं। किसी भी भाषा के विकास में 'उस भाषा में' रचित साहित्य की विशेष भूमिका होती है। हिन्दी भाषा में पर्याप्त साहित्य मिलता है। हिन्दी साहित्य की जड़ें मध्यकालीन भारत की अवधि, मागधी, अर्द्धमागधी तथा मारवाड़ी जैसी भाषाओं के साहित्य में पाई जाती है।

प्रस्तुत शोध पत्र में साहित्य और समाज के बारे में जानकारी प्रदान की गई। विश्व की लगभग सभी भाषाओं का अपना अलग–अलग साहित्य है। जैसी उस राष्ट्र की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व सांस्कृति परिस्थितियां होती है वैसा उस राष्ट्र का साहित्य होता है। अतः स्पष्ट है कि किसी राष्ट्र के इतिहास को जानने में उस राष्ट्र साहित्य विशेष भूमिका निभाता है। साहित्य की समाज का आईना होता है।

साहित्य समाज के मानसिक और सांस्कृतिक उन्नति व सभ्यता के विकास का साक्षी है। प्रत्येक युग का साहित्य अपने युग के प्रगतिशील भावों द्वारा किसी–न–किसी रूप जरूर प्रभावित होता है। जठराग्नि से उद्विग्न मनुष्य जैसे अनाज के एक–एक कण के तरशता रहता है उसी तरह मस्तिष्क की भी एक भूख होती है। उसका भोजन साहित्य है। साहित्य के रचनाकारों को समाज का छायाकर या चित्रकार भी कहा जाता है। साहित्यकार को समाज का प्राणत्व कहा जाता है।

साहित्य और समाज

साहित्य हमारी कौतुहल और जिज्ञासा वृत्तियों और ज्ञान की पिपासा को तृप्त करता है। साहित्य का मनुष्य जीवन में विशेष महत्व है। किसी भी जाति विशेष के इतिहास को जानने के उसके साहित्य को पढ़ना आवश्यक है। यहां पर इतिहास शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है, इतिहास का शाब्दिक अर्थ होता है – 'ऐसा ही था' अथवा 'ऐसा ही हुआ'। इतिहास का संबंध बीती हुई घटनाओं से होता है। इतिहास के अन्तर्गत केवल वास्तविक या यथार्थ घटनाओं को ही शामिल किया जाता है।

मानव के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का विश्लेषण ही साहित्य कहलाता है। 'साहित्य' शब्द 'स+हित+य' के मेल से बना है। शब्दकोश के अनुसार इसका तात्पर्य है – ''एकत्र होना'', 'मिलना' अथवा 'गद्य पद्य के वे कल्पनाप्रसूत ग्रंथ जिनमें ज्ञान संबंधी स्थायी भाव (विचार) लिखे रहते हैं।''

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार : ''प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृति की संचित प्रतिबिम्ब होता है। तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति में परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है।''

''साहित्स्य भावः साहित्यम्'' जिसमें सहित का भाव हो, वह साहित्य कहा जाता है।

साहित्य समाज का जीवन है, वह मानव के उत्थान पतन का साधन है, साहित्य के उन्नत होने से समाज उन्नत व साहित्य के पतन से समाज का पतन होता है। साहित्य वह प्रकाश है जो राष्ट्र को अंधकार रहित, जाति–मुख को उज्ज्वल और समाज के प्रभाहीन नेत्रों को सप्रभ रखता है। साहित्य वह कसौटी है जिस पर किसी जाति की सभ्यता व संस्कृति को कसा जा सकता है।

मुंशी प्रेमचंद जी के शब्दों में

जिस साहित्य में हमारी रूचि न जागे आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हम में गति और शांति पैदा न हो, हमारा सौन्दर्य प्रेम न जागृत हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाईयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता उत्पन्न न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है। वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

यदि हमें जीवित रहना है और सभ्यता की दौड़ में अन्य जातियों की बराबरी करना है तो हमें श्रमपूर्वक बड़े उत्साह से सत्साहित्य का उत्पादन और प्राचीन साहित्य की रक्षा करनी चाहिए। इस प्रकार अनेक साहित्यकारों ने साहित्य की परिभाषा देते हुए साहित्य के महत्व को स्पष्ट किया है। साहित्य उन अनेक साधनों में से एक जिसमें काल विशेष की स्फूर्ति परिप्लावित होकर राजनीतिक विचारों, धार्मिक विचार, दार्शनिक तर्क वितर्क और कला में प्रकट होती है। प्रत्येक भाषा का अपना साहित्य होता है। इसी प्रकार हिन्दी भाषा में प्रचुर साहित्य मिलता है। हिन्दी भाषा के साहित्य का काल विभाजन अनेक कवियों का अपने विचारों के अनुसार किया।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार हिन्दी साहित्य इतिहास का वर्ग विभाजन इस प्रकार है–

1) वीरगाथा काल (आदिकाल) वि.स. 1050 से वि.स. 1375 तक
2) पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) वि.स. 1375 से वि.स. 1700 तक
3) उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) वि.स. 1700 से वि.स. 1900 तक
4) गद्य काल (आधुनिक काल) वि.स. 1900 से वि.स. 1984 तक

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से मानव जीवन में साहित्य की समाज में भूमिका पर प्रकाश डालना है। साहित्य का मनुष्य जीवन में मूल उद्देश्य कुरीतियों, सभी की प्रकार की बुराईयों से दूर करके स्वस्थ, सुंदर और आनंदमय जीवन की ओर अग्रसर करना है। 'साहित्य' शब्द में ही 'हित' शब्द छिपा है अर्थात् मानव के हित के लिए साहित्य की अहम भूमिका है। साहित्य मनुष्य की रस व आनंद प्रदान करता है। साहित्य का विशेष अर्थ में महत्व (उद्देश्य) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति, व्यवहार ज्ञान कराने के साथ–साथ यश की प्राप्ति भी है। शुभमंगल की रक्षा भी साहित्य का मुख्य उद्देश्य है। साहित्य के महत्व का उदद्देश्य में निम्न पंक्तियों द्वारा भी समझा जा सकता है–

'साहित्य जीवन संघर्षों में'
सफलता की तलाश है
टूटे हुए मन में विप्लव
का अप्रितम आभास है।

साहित्य के शब्दों में
भावमय रेखांकन है
जीवन की मौन अनुभूतियों का
कागज के पृष्ठों पर सीमांकन है।

प्रस्तुत पंक्तियों में से साहित्य के महत्व का ज्ञान हमें प्राप्त होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में समझाया गया है कि किस प्रकार हम अपने भावों को व अपनी अनुभूतियों को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में 'साहित्य' की हमारे समाज तथा राष्ट्र के लिए महत्ता को स्पष्ट किया गया है। कई प्रमुख रचनाकारों ने अपनी कृत्तियों में 'साहित्य' शब्द को परिभाषित करके सामान्य पाठक व श्रोताओं को सुविधा प्रदान की है। हिन्दी साहित्य से हमें तत्कालीन समाज की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। धीरे–धीरे कैसे हमारे राष्ट्र ने उन्नति के शिखर पर पहचान बनाई है। यह सब जानकारी हमें 'साहित्य' को पढ़कर ही प्राप्त होती है। उदाहरण के तौर पर सबसे पहले संस्कृत भाषा में वेदों की रचना हुई। सबसे प्राचीन वेद 'ऋग्वेद' से हमारे समाज को तत्कालीन आर्यों के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त होती है। अन्य वैदिक रचनाएं अथर्ववेद, सामवेद व यजुर्वेद है। इनके अध्ययन से भी हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है। इसी प्रकार हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल के महान कवियों द्वारा (कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई) हमें समाजसुधारक प्रवृत्तियों को अपनाने की प्रेरणा मिलती है। अतः स्पष्ट है कि साहित्य किसी भी राष्ट्र का अभिन्न अंग है।

संदर्भ सूचि

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, लोकभारती, प्रकाशन।
2. हिन्दी शिक्षक मार्गदर्शिका – मनोज कुमार मिश्रा, प्रकाशक मिश्रा पब्लिकेशन।
3. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – बच्चन सिंह – प्रथम प्रकाशन सितम्बर 2007।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – संपादक – डॉ. नगेन्द्र, डा. हरदयाल।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास – कुमार सर्वेश, सार्थक प्रकाशन।
6. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास – विश्वनाथ त्रिपाठी।
7. श्री मद्वाल्मीकीय रामायणम् – गीताप्रैस, गोरखपुर।
8. हिन्दी साहित्य का बृहत्त इतिहास, पं. राहूल सांस्कृतयायन